ए.पी.जे अब्दुल कलाम के शैक्षणिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन

श्रीमती सरिता शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

ललिता यादव
बी.एड.एम.एड. छात्रा, बियानी गर्ल्स बी.एड कॉलेज

सारांश

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्ता डॉ.ए.पी.जे अब्दुल कलाम के विचार आधारित शिक्षा की व्यवस्था कैसी होनी चाहिए। डॉ. कलाम के अनुसार शिक्षा को किस प्रकार उपयोगी बनाया जा सकता है। शिक्षा द्वारा किस तरह से पूरे विश्व मंच में सुख शान्ति कायम रखा जा सकता है। यहाँ पर डॉ. कलाम के इन विचारों को प्रस्तुत किया गया।

मूल शब्द :*डॉ. अब्दुल कलाम, शैक्षणिक विचार, वर्तमान परिप्रेक्ष्य*

१.प्रस्तावना

शिक्षा आपको शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से विकसित करने में मदद करती है। ऐसा करके हम वर्तमान जीवन को आसान और अधिक सुखद बनाने में मदद करते है और आने वाली पीढ़ियों के जीवन को आसान बनाने में भी मदद करते है। यदि आप एक सफल जीवन चाहते है तो शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। अतीत में हमारे देश में शिक्षा मूल्यों और कौशल आधारित है। आज की दुनिया में शिक्षा में बहुत विविधता हैं। शिक्षा कही प्रकार हैं और यह तय करना कठिन हो सकता हैं कि कौन सा आपके लिए सबसे उपयुक्त है। आज की दुनिया में सीखल से जुड़ी कई चुनौतियां है।

उदाहरण के लिए कुछ वैज्ञानिक और इंजिनियर शिक्षा सुधार के लिए नए तरीकों पर काम कर रहे है। ज्ञान के निरंतर विकास से लाभान्वित होकर शिक्षा में निरंतर परिवर्तन होता रहा है। कौशल आधारित शिक्षा चीजो को सीखने की तरह हैं जो चीजों को बेहतर तरीके करने में आपकी मदद कर सकती है। यह व्यक्तिगत हैं क्योंकि यह आपको एक पूर्ण व्यक्ति बनने में मदद करता हैं और यह समाज और राष्ट्र से सम्बन्धित है। अब्दुल कलाम के शिक्षा और विचारों को आज के समय में निवेश करना चाहिए, खासकर उनकी कल्पना को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिष्टाचार के नियमों को जानना महत्वपूर्ण है। यदि आप कम उम्र से ही रचनात्मकता है तो आपके जीवन में सफलता प्राप्त करने की अधिक संभावना है। जब कोई व्यक्ति स्वेच्छा से और जिम्मेदारी से काम करता है, तो वह एक अच्छा इंसान बनता है। शिक्षा हमें अधिक पूर्ण विनम्र और दुनिया में योगदान करने में सक्षम बनाती है। यदि आपके पास सही शिक्षा है, तो आप सफल हो सकते है। एमनेस्टी इंटरनेशनल जैसे संगठनों के कारण मानवीय गरिमा, स्वाभिमान और भाईचारा बढ़ रहा है।

शिक्षा ज्ञान और कौशल प्राप्त करने पर आधारित है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सत्य की खोज करना है। शिक्षक इस खोज का केन्द्र है। वह अपने छात्रों को शिक्षा के माध्यम से जीवन की सच्चाई और व्यवहार की शिक्षा देते है। शिक्षक वह होता है जो छात्रों को वह सब कुछ सीखने मे मदद करता है, जिसमें उनकी रूचि हो और यदि कोई हो तो उन्हे कठिनाइयों का पता चलता है। वे अपनी

जिज्ञासा और अधिक जानने की इच्छा के लिए शिक्षक पर निर्भर करता है। आप एक किताब की तरह है जो हमें वह सब कुछ बता सकती है। जो हमें जानना चाहिए। यदि हर शिक्षित व्यक्ति शिक्षा को गंभीरता से लेता है और इसे अपने जीवन के सभी पहलुओं मे दूसरे के साथ साझा करता है, तो वर्तमान 21 वीं शताब्दी में दुनिया बहुत अधिक सुंदर जगह होगी।

हमारी शिक्षा प्रणाली हमारे बच्चों को यह सीखने में मदद करना चाहती है कि आलोचनात्मक तरीके से कैसे सोचे और रचनात्मक बने, साथ ही उन्हे चुनौती भी दे। हमारे देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। वे इस समय स्कूल में है। एक अच्छी शिक्षा प्रणाली को छात्रों को अपनी रूचियों का इस तरह से पता लगाने की अनुमति देनी चाहिए जो उनकी जिज्ञासा को संतुष्ट करें। स्कूलों को एक ऐसा पाठ्यक्रम बनाने के लिए तैयार रहना चाहिए जो भारत की बढ़ती आबादी की जरूरतों के अनुरूप हो। पाठ्यक्रम की आवश्यकता है कि बच्चे विकास के दौरान कुछ गतिविधियों को करें ताकि उन्हे बढ़ने और सिखने में मदद मिल सके।

२.समस्या का औचित्य

भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था क्रियात्मक कार्य को करने में विमुख हो चुकी है। इस कारण छात्र न तो पूर्ण रूप से शिक्षित हो पाता है और ना ही कौशल अर्जित कर पाता है। आज की युवा पीढ़ी ऐसी शिक्षा प्रणाली चाहती है जो उसके खोजी और सृजनशील मन को सबल बनाने के साथ–साथ उसके सामने चुनौती प्रस्तुत करें। देश का भविष्य उन पर टिका हुआ है। ये वर्तमान में शिक्षा प्रणाली के संबंध में सोच–विचार करना चाहते है। सही शिक्षा से मानवीय गरिमा, स्वाभिमान और विश्व–बंधुत्व में बढ़ोतरी होती है। ये गुण शिक्षा के आधार पर होते है। अनंत शिक्षा का उद्देश्य है 'सत्य की खोज'।

३.शोध का महत्व

डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम सभी के लिए शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण मानते है। इसके साथ उनका मानना ये भी था कि अच्छी शिक्षा देने के लिए एक अच्छा शिक्षक होना भी आवश्यक है। असली शिक्षा एक इंसान की गरिमा को बढ़ाती है और उसके स्वाभिमान में वृद्धि करती है।
अब्दुल का कहना है :– ''शिक्षण एक बहुत ही महान पेशा है, जो किसी व्यक्ति के चरित्र, क्षमता ओर भविष्य को आकार देता है।''

४.समस्या का कथन

''ए.पी.जे अब्दुल कलाम के शैक्षणिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन''

५.शोध के उद्देश्य

१.ए.पी.जे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों में राष्ट्रिय मूल्यों की चेतना के विकास का अध्ययन करना।

२.ए.पी.जे अब्दुल कलाम के राष्ट्र निर्माण एवं कर्म योग के लिए शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।

६.शोध अध्ययन की परिसीमाएँ

१. डॉ. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों तक ही सीमित अध्ययन करेंगे।

२. डॉ. अब्दुल कलाम के शैक्षिक सभी साहित्यों का अध्ययन न करके महत्वपूर्ण ग्रन्थों का ही अवलोकन किया जाएगा।

७.संबंधित साहित्य

आर. रमा देवी (2013)– ने आधुनिक भारतीय विचार में शिक्षा और मूल्यों पर एक अध्ययन का विश्लेषण किया। उद्देश्य–इस शोध के मुख्य उद्देश्य में प्रख्यात विचारकों के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना था और प्रस्तुत करना शिक्षा के तर्कसंगत, उदार वैज्ञानिक, सार्वभौमिक मूल्य। निष्कर्ष– इस अध्ययन में शोधकर्त्ता ने आधुनिक भारत के शेक्षिक विचारों के बारे में एक विश्लेषण किया है और, इसने आधुनिक यूरोपीय शैक्षिक रूझानों को कैसे आत्मसात् किया है और व इसे कैसे सप्रस्तुत करना चाहता है।

सिधु, हरदीप (3 नवम्बर,2013)– उद्यमिता को बढ़ावा देने वाली शिक्षा के लिए कलाम, इस लेख में, पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने 54वें स्थापना दिवस पर छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा, कि एक ऐसी शैक्षिक प्रणाली बनाने की आवश्यकता है। उद्देश्य–इस अध्ययन में मुख्य उद्देश्य ''वर्तमान संदर्भ में, शिक्षा प्रणाली को इस तरह से डिजाइन किया जाना चाहिए कि बड़ी संख्या में रोजगार पैदा करने वाले पैदा हो, न कि सिर्फ रोजगार चाहने वाले।'' निष्कर्ष– इस अध्ययन में कलाम ने कहा कि देश की शिक्षा प्रणाली को छात्रों को ऐसे उद्यम स्थापित करने के लिए तैयार करना चाहिए, जो उन्हें रचनात्मकता, स्वतंत्रता और धन पैदा करने की क्षमता दे सकें।

गुप्ता प्रशांत (2013)– विजडम ऑफ कलाम, यह पुस्तक जीवन दर्शन और शिक्षा से सम्बन्धित डॉ कलाम के उद्धरणों का एक सुंदर संग्रह है। उद्देश्य–कलाम एपीजे अब्दुल (अगस्त 27, 2013) इस व्याख्यान में डॉ कलाम ने अपने शैक्षिक विचारों में कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं बताई है, जैसा कि उन्होनें ज्ञान प्राप्त के उद्देश्य और ज्ञान के घटकों के बारे में बताया, ये रचनात्मकता, धार्मिकता और साहस के साथ ज्ञान का उपयोग करना सिखाएगा, तो राष्ट्र में बड़ी संख्या में सशक्त और प्रबुद्ध नागरिक होंगें, जो राष्ट्र के विकास और दुनिया में शांति को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

रूपेनवार, अशु (2016)– ''एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचार और विचार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' पर काम किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना था कि डॉ. कालम की बुनियादी शिक्षा उस बीमारी को दूर करने में कितनी मदद करती है। हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मौजूद है। निष्कर्ष– शोधकर्ता ने शिक्षा को प्रत्येक अवधारणा पर कई निष्कर्ष निकाले है, लेकिन पंक्तियों को शामिल करके निष्कर्ष निकाला है, डॉ. कलाम ने ''विकसित भारत'' के अपने मिशन को उड़ान देने के लिए शिक्षा को ईंधन के रूप में चुना था। डॉ. कलाम के जागृत विचारों ने देश के बच्चों और युवाओं को अपने राष्ट्रीय विकास मामलों के प्रति अधिक नवीन, रचनात्मकता और संवेदनशील होने के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

८.साहित्य विवेचना

देश विदेशो में प्रस्तुत समस्या के क्षेत्र में विभिन्न शोधकर्त्ता द्वारा बहुत से अनुसंधान कार्य किए है। जैसे :– राजन सर्वशंकर सदाशिव (1996) डॉ. अम्बेडकर महर्षि, ओमप्रकाश (2010) में 'वाल्मीकी रामायण में वर्णित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन' किया।

किशोरी जनक (2013) ने ''आचार्य हजारी प्रसाद के उपन्यासों में मानव मूल्य'' विषय पर शोधकार्य किया।

९.शोध विधि

प्रस्तुत शोध का कार्य का विषय क्षेत्र ऐतिहासिक एवं वर्णात्मक स्वरूप से संबंधित है, जिसके अन्तर्गत प्रमुख भारतीय विचारक डॉ. ए.पी.जे अब्दुल के शैक्षिक चिन्तन और शिक्षा दर्शन के तथ्यों को संकलित करने व खोजने के लिए ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया गया है।

१०.निष्कर्ष

डॉ. अब्दुल कलाम ने आधुनिक क्षेत्र में अपूर्व योगदान दिया है। शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक मूल्यों के विकास मे उनके साहित्य में निहित तथ्य अत्यन्त सराहनीय है।

1.धार्मिक एकता पर बल देते हुए धार्मिक क्रिया कलापों में नियमितता को महत्वपूर्ण मनाते है।
2.समस्या के समाधान हेतु प्रयत्न करने वालों की हार नही होती है।
3.मनुष्य को अहंकार का त्याग करना अत्यन्त आवश्यक है।
4.सच्चे मनुष्य में परोपकारिता, मानवतावादी एवं धर्म निरपेक्षता के गुण होते है।
5.कम से कम दो गरीब व्यक्तियो को आत्मनिर्भर बनाने के लिए शिक्षा प्राप्ति में मदद करों।
6.अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मेहनत करो और ईश्वर के समक्ष प्रार्थना करो।

संदर्भ सूची

१. टीचर्स टुडे – नया शिक्षक
२. राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान – 2005
३. राजस्थान शिक्षा अनुसंधान – 2006
४. सिन्धु हरद्वीप (2013).उद्यमिता को बढावा देने वाली शिक्षा के लिए www.kamal.com से लिया गया।
५. रूपेनवार ए. (2016).एपीजे अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचार एव विचार विशलेषणात्मक अध्ययन।
६. www.abdulkamal.com
७. https://hdl.handle.net/106031141318